कैम्पस कनेक्ट

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर का समाचार बुलेटिन

नवम्बर, 2025 • वर्षः 1 • अंकः 4

प्रेरणा-स्रोतः

श्रीमती आनन्दीबेन पटेल
माननीया कुलाधिपति एवं श्री राज्यपाल, उ. प्र.

श्री योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमन्त्री, उ.प्र.

संरक्षकः

प्रो. कविता शाह
कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

परामर्श-मण्डलः

प्रो. दीपक बाबू
प्रो. सौरभ
प्रो. प्रकृति राय
प्रो. नीता यादव
श्री दीनानाथ यादव (कुलसचिव)

सम्पादकः

प्रो. हरीशकुमार शर्मा

सह-सम्पादकः

डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक-मण्डलः

डॉ. शिवम शुक्ल
डॉ. रेनू त्रिपाठी
डॉ. अनुज कुमार
डॉ. सत्यम मिश्र

वित्त-प्रबन्धनः

श्री रमेन्द्र कुमार मौर्य
(वित्त अधिकारी)

तकनीकी सहयोग एवं डिजाइनिंगः

श्री दिव्यांशु कुमार

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशकः

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय
कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश-272202
ईमेलः **campus.connect@suksn.edu.in**
वेबसाइटः **www.suksn.edu.in**
(सम्पादन-प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक)

नोटः रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

कुलपति कथन

'नगरं यथा पच्चन्तं गुततं सन्तरबाहिरं
एवं गोपेथ अत्तानं खणो वे मा उपच्चगा।'

'धम्मपद' का यह श्लोक कहता है- सीमान्त का नगर जिस प्रकार अन्दर से और बाहर से पूर्ण सुरक्षित रहता है, उसी प्रकार अपनी (अन्दर और बाहर कड़ी) चौकी रखे। कोई भी क्षण बगैर चौकी का न जाने दे।

भगवान बुद्ध का ही एक अन्य सूत्र-कथन है- **'अत्त दीपो भव'**। यह सिद्धार्थ विश्वविद्यालय का ध्येय-वाक्य भी है। विगत माह हमने दशहरा मनाया, दीपावली मनायी, इनसे जुड़े और भी बहुत से उत्सव मनाये। दशहरा में हमने रावण जलता हुआ देखा तो दीपावली पर खूब दिये जलाये। दशहरा हमें भगवान बुद्ध के उपर्युक्त कथन से जोड़ता है कि हम अपने भीतर निरन्तर चौकीदारी रखें कि कहीं हमारे भीतर कोई दुर्गुण तो घुसपैठ करने की कोशिश नहीं कर रहा है। एक भी दुर्गुण की घुसपैठ हमारे भीतर के नगर को असुरक्षित करने को पर्याप्त है, क्योंकि वह हमारी असावधानी से अपनी सेना को भीतर प्रवेश करने का मार्ग खोल देगा। इसलिये हमें समर्थ बनना पड़ेगा, सशक्त बनना पड़ेगा और सजग भी रहना पड़ेगा। इसके लिये स्वयं अपना दीपक बनना पड़ेगा। बकौल कवि गोपालदास नीरज बाहर तो हम दिये जलायें ही- **'जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना/अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाये'**- परन्तु, साथ ही अपने भीतर के दिये को भी सतत प्रज्वलित करके रखें। वही हमारे भीतर का अंधेरा दूर कर हमें अपने को पहचानने में, अपनी शक्ति से अवगत कराने में और अपनी क्षमताओं पर विश्वास कराने में सहायक बनेगा। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा का एक गीत है- **'दीप मेरे जल अकम्पित।'** तो हमारे भीतर का यह दीप कभी काँपे नहीं, कभी इसकी लौ कमजोर न पड़े, आभा मन्द न हो- इसका हमें ध्यान रखना है। हमारे विद्यार्थियों के जीवन का यह निर्माण-काल है। अतः उनको तो इस ओर ध्यान देने की और भी आवश्यकता है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय उन्हें इसी मार्ग पर ले जाने के लिये सन्नद्ध है।

विगत अक्टूबर माह में विश्वविद्यालय ने सिद्धार्थोत्सव मनाया। 17 अक्टूबर को विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस था और इस माह अर्थात् नवम्बर में हम अपना नवम् दीक्षान्त समारोह आयोजित करने जा रहे हैं। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस तथा दीक्षान्त समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित इस पंच दिवसीय सिद्धार्थोत्सव में बहुत सारी प्रतियोगिताएं आयोजित हुई, अनेकानेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। सबमें विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ बढ़-चढ़कर भागीदारी की। इसने इस बात को सिद्ध किया कि हमारे विद्यार्थियों के पास क्षमता है और शिक्षकों के पास उन्हें निखारने का कौशल। यह आगामी समय के लिये एक शुभ संकेत है। मुझे पूरा विश्वास है कि शिक्षक और विद्यार्थी इसी ऊर्जा और उत्साह को लेकर सतत आगे बढ़ेंगे। विश्वविद्यालय के शिक्षकों और शिक्षार्थियों को उनकी इस तेजस्विता और ऊर्जस्विता के लिये साधुवाद, बधाई और भविष्य के उज्ज्वल-पथ हेतु शुभकामनाएं।

- कविता शाह

विश्वविद्यालय कुलगीत

आत्मदीप प्रकाश पावन परम् विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही सिद्धार्थ जिसका नाम।
बुद्ध की करुणा अहिंसा प्रेम का उपहार,
उमड़ता रहता अहर्निश शान्ति-पारावार,
ज्ञान का आलोक मानव का परम सन्देश,
नित्य प्रज्ञा प्रीति गुरुओं का नवल निवेश।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

परम पावन परम निर्मल पुण्य भूमि प्रकाश,
ज्ञान का आनन्द का आलोक का आकाश,
महा करुणा से अलंकृत कपिलवस्तु महान,
अमरता की चिर तृषा का लोक मंगल गान।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

नमन इसको इस धरा को कोटि कोटि प्रणाम,
यह नहीं बस एक संस्था तीर्थ अमृत धाम,
महाप्रज्ञा महाकरुणा शान्ति का सन्देश,
विश्वगुरु का यह तपोमय ज्ञान का परिवेश।
आत्मदीप प्रकाश पावन परम विद्या धाम
विश्वविद्यालय यही सिद्धार्थ जिसका नाम।

स्वागत

बुद्ध की पावन धरा पर, आज अभिनन्दन तुम्हारा।
हे अतिथि स्वीकार कर लो, विनत अभिवादन हमारा।
यह धरा है ज्ञान की, विज्ञान की, वरदान की,
पुण्य-पथ पर अनुगमन की, प्रेरणा परिवेश सारा।

विद्या धन

विद्या धन सबसे बड़ा, सबसे उत्तम ज्ञान।
करता इसको प्राप्त जो, उसका बढ़ता मान।।
उसका बढ़ता मान, सभी को वह प्रिय होता।
रहे कहीं वह किन्तु, चगक न अपनी खोता।
तेजवान बनना है तो, विद्या-धन पाओ।
दान खुले हाथों से, करके सुयश कमाओ।।

पुस्तक सच्ची मित्र हैं इनसे कर लो प्यार।
इनसे बढ़कर दूसरा, और न कोई यार।।
और न कोई यार, हमें पथ यह दिखलातीं।
ज्ञानलोक की सैर, पकड़ उंगली करवातीं।
कर तनाव को दूर, उदासी को यह काटें।
सुख-दुख की घड़ियों में ये अपनापन बाँटें।।

विद्यार्थी जीवन बड़ा, मानव को अनमोल।
एक-एक क्षण का भी, इसमें बड़ा है मोल।।
इसमें बड़ा है मोल, तोलकर कदम बढ़ाओ।
समय का कर उपयोग, जिन्दगी सफल बनाओ।
इस अवसर पर अगर, समय को व्यर्थ गँवाया।
समझो कुछ बने पाने का, मौका ठुकराया।।

Scanned with OKEN Scanner

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में आयोजित सिद्धार्थोत्सव 2025 के मुख्य उत्सव स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रख्यात गायिका, बनारस घराने की प्रतिनिधि एवं भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ की मानस पुत्री पद्मश्री डॉ. सोमा घोष ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रत्येक विद्यार्थी के भीतर एक परम शक्ति निहित होती है, जिसे हम शिवशक्ति के रूप में जानते हैं। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपनी इसी अंतर्निहित शक्ति को पहचानें, उसका विकास करें और अपने जीवन को कर्मशील तथा संस्कारवान बनाएं।

उन्होंने कहा कि ईश्वर-बोध ही कर्म को दिशा देता है, और यही कर्मशीलता व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र-तीनों के विकास का आधार बनती है। भारतीय संस्कृति में निहित संस्कार, साहित्य और कला इस ईश्वर-बोध के विस्तार हैं, जो जीवन को सौंदर्य, संतुलन और सृजन से जोड़ते हैं। डॉ. घोष ने कहा कि आज के भौतिकवादी युग में पाश्चात्य प्रभावों के कारण भारतीय संस्कृति के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। इन चुनौतियों का समाधान केवल इसी में है कि हम अपनी सनातन परंपरा और भारतीय संस्कृति के मूल मूल्यों को आत्मसात रखते हुए, विश्व की अच्छी बातों को विवेकपूर्ण ढंग से अपनाएँ।

उन्होंने विशेष रूप से छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि संस्कार और संस्कृति के संवहन में बालिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। बालिका ही आने वाली पीढ़ियों की धरोहर है, क्योंकि माँ के संस्कार ही संतान में प्रवाहित होते हैं। भारतीय परंपरा में प्रत्येक बालिका में माँ दुर्गा की शक्ति निहित मानी गई है। इसलिए प्रत्येक बालिका अपने भीतर की इस शक्ति को पहचानते हुए समाज में सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बन सकती है। अंत में उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में वह समग्र दृष्टि और जीवनदर्शन निहित है जो भारत को वैश्विक नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम बनाता है। विद्यार्थियों को इस दिशा में अग्रसर होना चाहिए ताकि वे संस्कारित, कर्मनिष्ठ और सशक्त भारत के निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकें।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि एवं डुमरियागंज लोकसभा सीट से माननीय सांसद श्री जगदम्बिका पाल ने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय निरंतर नए-नए उच्च आयामों की ओर अग्रसर है और शिक्षा के माध्यम से समाज के सर्वांगीण विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि आज कल किसी भी अवसर पर बेटियों की शत प्रतिशत सहभागिता इस बात का प्रतीक है कि विकसित भारत/2047 का लक्ष्य प्राप्त करने में महिलाओं की सहभागिता निश्चित रूप से महत्वपूर्ण रहेगी।

इस अवसर पर सि.वि. की कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय सदैव प्रगति के पथ पर अग्रसर है। सिद्धार्थोत्सव का उद्देश्य विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, सहयोग और सांस्कृतिक चेतना का विकास करना था, जिसे हमारे विद्यार्थियों ने अपने उत्साह, समर्पण और उत्कृष्ट सहभागिता से पूर्ण रूप से सार्थक बना दिया है। यह उत्सव केवल एक सांस्कृतिक पर्व नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की प्रतिभा, रचनात्मकता, अनुशासन और विश्वविद्यालय की निरंतर प्रगति का प्रतीक है। ऐसे आयोजन विद्यार्थियों में टीम भावना, आत्मविश्वास तथा भारतीय संस्कृति और परंपराओं के प्रति गहरी आस्था का संचार करते हैं।

सिद्धार्थोत्सव में उपस्थित विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद् के सदस्य एवं इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति श्री अनिरुद्ध सिंह ने उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय ने अत्यंत कम समय में जिस तीव्र गति से शैक्षणिक और संस्थागत प्रगति की है, वह सराहनीय है। उन्होंने आगे कहा कि सिद्धार्थोत्सव के माध्यम से कुलपति ने विद्यार्थियों को एक ऐसा मंच प्रदान किया है जिससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अनुशासन और सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना का विकास हुआ है जो कि उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण में होगा ।

समारोह में विवि के कुलसचिव श्री दीनानाथ यादव ने सभी मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, माननीय कुलपति, उपस्थित श्रोता गणों का स्वागत करते हुए कहा कि सिद्धार्थोत्सव विद्यार्थियों को अपने सृजनात्मक दृष्टिकोण और नेतृत्व क्षमता को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करता है। समारोह के अंत में धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए अध्यक्ष छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव ने सभी मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, कुलपति, प्राध्यापकगण और छात्र-छात्राओं को समारोह में सहभागिता और योगदान के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि ऐसे आयोजन विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक, शैक्षणिक और सामाजिक उद्देश्य को सार्थक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समारोह में मंच संचालन डॉ. शिवम् शुक्ल और डॉ. रेनू त्रिपाठी ने कुशलता और प्रभावशाली ढँग से किया।

Scanned with OKEN Scanner

प्रतियोगिताओं के विजेता पुरस्कृत

सिद्धार्थोत्सव 2025 के मुख्य समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह, मुख्य अतिथि माननीय सांसद श्री जगदम्बिका पाल, विशिष्ट अतिथि पद्मश्री सोमा घोष के करकमलो से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

कविता पाठ प्रतियोगिता में संयुक्त रूप से अतुल उपाध्याय एवं सुहानी को प्रथम, डॉक्यूमेंटरी प्रतियोगिता में अमित कुमार लोधी, पोस्टर मेकिंग पतियोगिता में ज्योति पासवान, एकल नृत्य में शालिनी शुक्ला, जनरल फोटोग्राफी में श्रद्धा तिवारी, वन्य जीव फोटोग्राफी में अभिषेक चौधरी, चित्रकला प्रतियोगिता में आदित्य प्रताप, एकल गान में शालिनी पांडेय, फेस पेंटिंग में संयुक्त रुप से पूजा विश्वकर्मा और शिल्पी कसौधन, मेहंदी प्रतियोगिता में वैश्वा श्रीवास्तव, टैटू मेकिंग में मनीषा सिंह, परिधान प्रतियोगिता में रोहन एवं गायत्री, वाद विवाद प्रतियोगिता में मनीष जैसवाल, घनिष्ठा शुक्ला, स्थल चित्र प्रतियोगिता में आदित्य प्रताप, आंगनबाड़ी केंद्र महादेव कुर्मी की सहायिका शीला देवी, व्यापार विचार प्रतियोगिता में साक्षी पांडेय, एडमेड शो प्रतियोगिता में साक्षी पाठक, समूह गायन शकीला, लोक नृत्य प्रतियोगिता में शालिनी सिंह एवं खुशी सिंह, बलवीर सिंह, रामकुमार यादव, रामवीर, श्याम तथा तनु पांडेय को प्रसस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

नवम् दीक्षांत समारोह के 'लोगो' का अनावरण

इस अवसर पर नवम दीक्षांत समरोह के 'लोगो' का अनावरण भी विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह, मुख्य अतिथि माननीय सांसद श्री जगदम्बिका पाल, विशिष्ट अतिथि पद्मश्री सोमा घोष के कर-कमलों से किया गया।

विश्वविद्यालय के आगामी नवम्बर माह में आयोजित होने वाले नवम् दीक्षान्त समारोह के प्रतीक-चिह्न (लोगो) के निर्माण के लिये एक प्रतियोगिता गणित विभाग के अध्यक्ष डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह के संयोजन में करायी गयी थी, जिसके आधार पर दीक्षान्त समारोह के लिये स्नातक प्रथम वर्ष के विद्यार्थी सूरज कुमार चौरसिया द्वारा तैयार किये गये लोगो का चयन किया गया। इस लोगो-निर्माण प्रतियोगिता के विजेता सूरज कुमार चौरसिया को अतिथियों द्वारा कार्यक्रम में पुरस्कृत भी किया गया।

लाल चंदन एवं सफेद चंदन का पौधारोपण

समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय के गौतम बुद्ध सभागार के मुख्य द्वार पर लाल चंदन और सफेद चंदन के पौधों का रोपण अतिथिगण सांसद श्री जगदम्बिका पाल, पद्मश्री डॉ. सोमा घोष और कुलपति प्रो. कविता शाह के करकमलों से किया गया।

इस अवसर पर अतिथियों ने कहा कि यह पौधारोपण पर्यावरण संरक्षण, हरियाली और प्राकृतिक संतुलन के महत्व का प्रतीक है। उन्होंने सभी को प्रकृति की सुरक्षा और संवर्धन के प्रति जागरूक रहने का संदेश भी दिया।

विशिष्ट जन का सम्मान

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में आयोजित कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद् के सदस्य एवं इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति श्री अनिरुद्ध सिंह का सम्मान विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह, मुख्य अतिथि माननीय सांसद श्री जगदम्बिका पाल, विशिष्ट अतिथि पद्मश्री सोमा घोष के करकमलों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर श्री सिंह ने विश्वविद्यालय परिवार को संबोधित करते हुए कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय ने अत्यंत कम समय में जिस तीव्र गति से शैक्षणिक और संस्थागत प्रगति की है, वह सराहनीय है। इस उपलब्धि के लिए विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। सम्मान के इस क्रम में ए आई आधारित मेनटोरिफिएड टेक्नोलॉजी के संस्थापक श्री राहुल चौधरी एवं विवि की पूर्व छात्र एवं प्रसिद्ध कवयित्री सुश्री साधना कौर को भी सम्मनित किया गया।

लोकगीत

(1)

मेरे चरखे का टूटे न तार, चरखवा चालू रहे।
दूल्हा बने हैं गाँधी महात्मा, दूल्हा बने हैं।
दुल्हन बनी सरकार, चरखवा चालू रहे।।
मोतीलाल सहबाला बने हैं, मोतीलाल।
हिलमिल बने उनका सार, चरखवा चालू रहे।।
सहुआ लाल पियर बरतिया बने हैं, सहुआ।
पंचम जार्ज दिये कन्यादान, चरखवा चालू रहे।।
भारत की तरफ से आई बरतिया, भारत।
लन्दन में डारे पुकार, चरलवा चालू रहे।।
ब्याहन आये है गांधी महात्मा, ब्याहन।
खिचड़ी पे मांगे स्वराज, चरखवा चालू रहे ।।

(2)

चरखा कातौ मेरी बहना प्रेम से जी,
एजी कोई जल्दी से होय सुधार।
बढ़िया बढ़िया कोतो मेरी बहना सूत को जी,
एजी कोई पहने सब परिवार।
माल विदेसी बहना मेरी त्याग दो जी,
एजी कोई देसी का करो प्रचार।
भारत माँ को चरखा लाइलो जी,
एजी जासे देस को होय उद्धार।

Scanned with OKEN Scanner

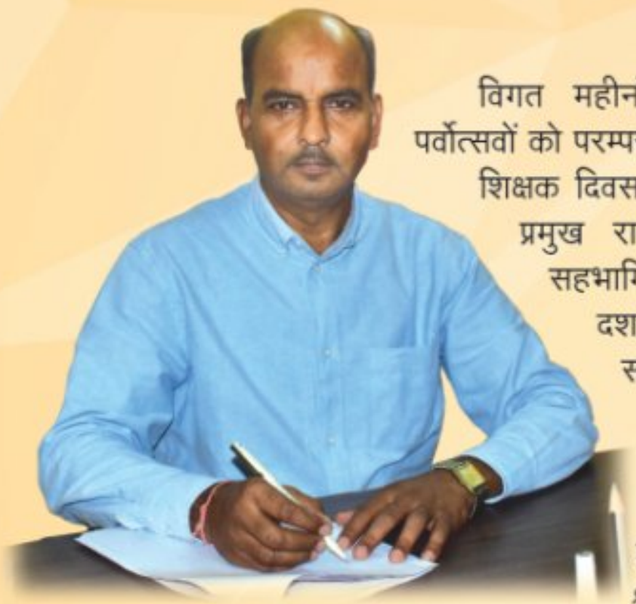

सम्पादकीय

विगत महीनों में हमने अनेक राष्ट्रीय-सांस्कृतिक पर्वोत्सवों को परम्परानुसार सोल्लास मनाया। स्वतन्त्रता दिवस, शिक्षक दिवस, हिन्दी दिवस, गांधी-शास्त्री जयन्ती जैसे प्रमुख राष्ट्रीय पर्वों में जहाँ हमने उत्साहपूर्वक सहभागिता की तो वहीं रक्षाबन्धन, नवरात्र, दशहरा, धनतेरस, दीपावली आदि अपने महान सांस्कृतिक उत्सवों को पूरी आस्था और उत्साह के साथ मनाया। इन अवसरों पर भारी खरीददारी होती है और बाजारों में भी उत्सव जैसा वातावरण बन जाता है। इधर काफी समय से माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लगातार स्वदेशी अपनाने की मुहिम चला रखी है और अनेक बार देश की जनता को यह सन्देश दिया है। उसका प्रभाव भी लोगों पर पड़ा है और समाज तथा व्यापारियों ने इस दृष्टि से सजगता दिखानी शुरू की है। वस्तुतः स्वदेशी का विचार स्वदेश के प्रति हमारे प्यार से जुड़ा है। अगर हमें अपने देश से प्यार है तो स्वाभाविक ही देश की चीजों से भी प्यार होगा और हम उन्हें स्वयं ही नहीं अपनायेंगे, दूसरों को भी उन्हें अपनाने के लिये प्रेरित करेंगे। स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग से हम अपने देश के लोगों को आगे बढ़ाते हैं और इस प्रकार प्रकारान्तर से अपने देश को आगे ले जाने में अपनी भूमिका निभाते हैं।

गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' के गीत 'स्वदेश' की बड़ी प्रसिद्ध पंक्तियाँ हैं-

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

वस्तुतः राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के 'स्वदेशी' हमारी स्वाधीन चेतना का एक प्रमुख अवयव था। एक तरफ जहाँ हम स्वराज पाने के लिये प्रयत्न कर रहे थे तो वहीं दूसरी ओर स्वदेशी वस्तुएं तैयार करने तथा उन्हें अपनाने के लिये भी जनमानस को तैयार कर रहे थे। गांधी जी का चरखा स्वदेशी का ही एक प्रतीक था, जो घर-घर में आ चुका था। गांधी जी ने स्वदेशी के विचार को आगे बढ़ाने में निश्चय ही अपनी बड़ी भूमिका निभायी, परन्तु उनके पहले से ही साहित्यकार इस ओर ध्यान दिलाकर प्रबुद्ध वर्ग को प्रेरित कर रहे थे। सन् 1850 से 1885 तक मात्र 35 वर्ष के अपने जीवनकाल में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने जो किया, उसके कारण हिन्दी साहित्य में पूरा एक युग उनके नाम से जाना जाता है। भारतेन्दु जी का विशेष ध्यान इस ओर रहा। उन्होंने बार-बार अपने साहित्य में परदेशी वस्तुओं के अपनाने से भारत को होने वाली हानि की चर्चा की और लोगों को स्वदेशी वस्तुएं निर्मित करने तथा उन्हें अपनाने के प्रति प्रेरित किया। भारत का धन विदेश में जा रहा है, इसकी बड़ी चिन्ता उन्हें थी। 'अंग्रेज राज सुख साज सबै अति भारी। पै धन विदेस चलि जात इहै अति ख्वारी'- कहने वाले भारतेन्दु जी ने इस कारण से होने वाली भारत की दुर्दशा की अनेकशः चिन्ता की है और लोगों से इस स्थिति को बदलने का आह्वान भी किया है। अपनी एक कविता में वे कहते हैं-

सीखत कोउ न कला, उदर भरि जीवत केवल।
पसु समान सब अन्न खात पीअत गंगाजल।
धन विदेस चलि जात तऊ जिय होत न चंचल।
जड़ समान ह्वै रहत अकिल हत रचि न सकत कल।
जीवत विदेस की बस्तु लै ता बिन कछु नहिं करि सकत।
जागो जागो अब साँवरे सब कोउ रुख तुमरो तकत।

भारतेन्दु जी की पहल का असर यह हुआ कि न केवल भारतेन्दु युग के कवियों ने, अपितु द्विवेदी युग तथा उससे आगे के कवियों ने भी प्रखर राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत कविताएं लिखीं और स्वदेशी का प्रबल समर्थन किया। यहाँ तक कि राष्ट्रीय चेतना से युक्त बहुत से लोकगीत भी उस दौर में रचे गये और जनता में प्रचलित हुए। उनमें भी स्वदेशी अपनाने को अनेक प्रकार से लोगों को प्रेरित किया गया। इस सबसे एक वातावरण बना, लोग एकजुट हुए और अन्ततः हमें अपने अभीष्ट स्वराज्य की प्राप्ति हुई।

आज हमारी स्थिति अलग है, परन्तु स्वदेशी की महत्ता रत्ती भर भी कम नहीं हुई है। तब हमारे सामने विकल्प नहीं था। आज अधिकांश वस्तुओं का विकल्प स्वदेशी के रूप में उपलब्ध है। सब निर्माता नहीं हो सकते, पर उपभोक्ता तो सभी होते ही हैं। तो, हमें बस करना इतना भर है कि बाजार से कुछ लाते समय चयन को ध्यान रखना है। यदि हमारे पास हमारे ही देश में बनी वस्तु का विकल्प है, तो विदेशी वस्तु की जगह वह क्यों नहीं? होता यह है कि हम प्रायः चाहते हुए भी ध्यान नहीं देते। जो वस्तु पहले से लेते आ रहे हैं, वही हमारे ध्यान में होती है और उसी को घर में लाते रहते हैं। आज हमारे पास बहुत सी चीजों के तो बहुत श्रेष्ठ विकल्प स्वदेशी के रूप में उपलब्ध हैं। तो फिर वे हमारे घर में क्यों नहीं? थोड़ा अगर यदि हम इस ओर ध्यान दे लें तो अनायास ही राष्ट्र के विकास में अपनी भागीदारी कर सकते हैं।

स्वदेश में बनी वस्तुओं के अतिरिक्त भी स्वदेशी के अनेक आयाम हैं, यथा स्वधर्म, स्व-संस्कृति, स्वभाषा, स्वाभिमान, स्वशासन या स्वाधीनता, स्वानुशासन, स्वभाव, स्वत्व आदि-आदि। भारतेन्दु जी ने भारत के स्वत्व-ग्रहण का स्वप्न देखा था- 'स्वत्व निज भारत गहै।' आज भारत उस स्वत्व को ग्रहण करने की दिशा में तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में काफी-कुछ हमारी उपलब्धियाँ हैं, परन्तु हर क्षेत्र में हमें आत्मनिर्भर होना पड़ेगा; तब हम सही मायने में इस स्वत्व को प्राप्त कर पायेंगे। सन् 2047 तक विकसित देश बनने का हमारा राष्ट्रीय लक्ष्य है। यह लक्ष्य किन्हीं और लोगों के द्वारा नहीं, हमारे ही द्वारा अर्थात् हम भारतवासियों के द्वारा ही पूरा किया जाना है। अतः हम सबके स्तर से इसमें जो सहयोग हो सकेगा, वह इस कार्य को आसान बनाने वाला होगा। स्वदेशी का उपयोग भी एक इसी तरह का सहयोग है।

'कैम्पस कनेक्ट' का यह चौथा अंक है। अभी तक हमें अपने विद्यार्थियों से यथेष्ट रचनाएं नहीं प्राप्त हो पा रही हैं। अतः हम अपने विद्यार्थियों से आग्रह करेंगे कि वे कैम्पस कनेक्ट से जुड़ें, उसे पढ़ें, उसका पूरा लाभ उठायें और उसके लिये लिखकर उसके माध्यम से अपनी रचनात्मकता को सामने लायें; तभी हमारा उद्देश्य पूरा होगा और इसका प्रकाशित होना सार्थक होगा।

जय भारत, जय भारती

गांधी-कथन

मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि यद्यपि आजकल ईसाई मित्र अपने मुँह से तो ऐसा नहीं कहते या स्वीकार नहीं करते कि हिन्दू-धर्म झूठा धर्म है, तो भी उनके दिल में अब भी यही भाव जड़ जमाये हुए है कि हिन्दू-धर्म सच्चा धर्म नहीं है और ईसाई धर्म ही-जैसा उन्होंने उसे समझ रखा है- एकमात्र सच्चा धर्म है। उनकी यह मनोवृत्ति उन उद्धरणों से प्रकट होती है जो मैंने कुछ समय पहले सी.एम.एस. की अपील में से 'हरिजन' में दिये थे। जब तक यह न मान लिया जाये कि उक्त अपील के पीछे यही मनोवृत्ति काम कर रही है तब तक उसकी कद्र करना तो दूर, उसे समझा भी नहीं जा सकता। हिन्दू समाज में घुसी हुई छुआछूत या ऐसी ही अन्य भूलों पर अगर कोई प्रहार करे तो वह तो समझ में आ सकता है। अगर इन मानी हुई बुराइयों को दूर करने और हमारे धर्म की शुद्धि में वे हमारी सहायता करें तो यह एक ऐसा रचनात्मक कार्य होगा जिसको बड़ी जरूरत है और उसे हम कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार भी करेंगे। पर आज जो प्रयास हो रहा है उससे तो यही दिखाई देता है कि यह तो हिन्दू-धर्म को जड़ मूल से उखाड़ फेंकने और उसके स्थान पर दूसरा धर्म कायम करने को तैयारी है। यह तो ऐसी बात है मानो किसी पुराने मकान को, जिसमें मरम्मत की बड़ी जरूरत है, पर जो रहनेवाले को अच्छा और काम देने लायक मालूम होता है, कोई जमीन में मिला देना चाहे। अगर कोई जाकर उस गृह-स्वामी को यह बताये कि उसमें क्या-क्या सुधार और मरम्मत करनी है, तो इसमें जरा भी आश्चर्य नहीं कि वह उनका स्वागत करेगा। पर अगर कोई उस मकान को ही गिराने लगे जिसमें वह और उसके पूर्वज पीढ़ियों से रहते आये हैं, तो वह जरूर ऐसा करने वालों का प्रतिकार करेगा। हाँ, उसे खुद ही यह विश्वास हो जाये कि मरम्मत से काम नहीं चलेगा, वह. आदमी के रहने लायक ही नहीं रहा, तो बात दूसरी है। सो अगर हिन्दू-धर्म के विषय में ईसाई-संसार का यही मत है, तो 'सर्व-धर्मसम्मेलन' और 'अन्तर्राष्ट्रीय विश्वबन्धुत्व' आदि शब्द निरर्थक हो जाते हैं। क्योंकि ये दोनों शब्द समानता के सूचक हैं और एक ऐसा मंच सूचित करते हैं जहां सब समान भाव से इकट्ठे हो सकते हैं। जहां ऐसी मान्यता हो कि कुछ धर्म ऊँचे हैं और कुछ नीचे, कुछ के पास ज्ञान का प्रकाश है और कुछ उससे वंचित हैं, कुछ सुसंस्कृत हैं और कुछ असंस्कृत, कुछ अभिजात हैं और कुछ कुजात, कुछ जाति में शामिल हैं और कुछ उससे बाहर, वहाँ सबके लिए सुलभ कोई एक मंच कैसे हो सकता है? मेरी तुलना भले ही सदोष हो, शायद अपमानजनक भी मालूम हो, मेरी युक्तियां भी चाहे निर्दोष न हों. पर मैं जो बात कह रहा है वह अकाट्य है।

(राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली से प्रकाशित महात्मा गांधी की पुस्तक 'हिन्दू धर्म क्या है' से साभार)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के दोहे

भारत में सब भिन्न अति, ताही सों उतपात।
विविध धर्म मतहू बिविध, भाषा विविध लखात।।
निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।

फूट बैर को दूरि करि, बाँधि कमर मजबूत।
भारत माता के बनो, भाता पूत सपूत।
छोड़ौ स्वारथ बात सब, उठहु एक चित होय।
मिलहु कमर कसि भातगन, पावहु सुख, दुख खोय।।
परदेसी की बुद्धि अरु, बस्तुन की करि आस।
परबस ह्वै कब लौं कहो, रहिहौ तुम ह्वै दास।।

सम्पादक मण्डल

Scanned with OKEN Scanner

हौं तौ मुगलानी...

(रीतिकालीन प्रसिद्ध कवयित्री ताज के कवित्त)

काहू को भरोसो वेद चारों जो पढ़ै होत
काहू को भरोसो गंगा न्हाये सहस्र धार को।
काहू को भरोसो सब देवन के पूजे 'ताज'
काहू को भरोसो विधि शंकर उदार को।
काहू को भरोसो मनि पाये मिले पारस को
काहू को भरोसो सूर बीरन के लार को।
तारन वे तरन कृष्ण सुने जो जहान बीच,
मोको तो भरोसो एक नन्द के कुमार को।।

सुनो दिल जानी मेरे दिल की कहानी
तुम दस्त ही बिकानी बदनामी भी सहूँगी मैं।
देव पूजा ठानी मैं निवाज हूँ भुलानी
तजे कलमा कुरान साइें गुनन गहूँगी मैं।।
स्यामला सलोना सिर ताज सिर कुल्ले दिये
तेरे नेह दाग में निदाग हो दहूँगी मैं।
नन्द के कुमार कुरबान तोड़ी सूरत पै
ताइ नाल प्यारे हिन्दुवानी हो रहूँगी मैं।।

(अनन्य प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'हिन्दी के मुसलमान कवि: से साभार)

जन्म भूमि (तेलुगु कविता)

- श्री रायप्रोलु वेंकट सुब्बाराव

चाहे जिस देश में भी क्यों न जाओ
जिस प्रान्त औ' जिस पीठ पर भी
क्यों न तुम निज पैर रक्खो,
और कोई सामने से क्यों न गुजरे,
तुम करो गुण-गान अपनी मातृभूमि भारत का
औ, करो रक्षा अपने जाति-गौरव की।

किस पूर्व पुण्य से, किस योग-बल से
जन्म तुमने लिया इस स्वर्ग-भुवि पर
जाने किन पुण्य पुष्पों से तुमने स्नेह जोड़ा
कि तुम्हें कनक-गर्भ में माता ने पाया।
ऐसी भूदेवि तो कहीं नहीं रे!
हम जैसे धीर नहीं कहीं रे!
बढ़ेंगी जहाँ तक सूर्य की रश्मियाँ
नाचेंगी जहाँ तक नावों की झंडियाँ
वहाँ तक जो पृथ्वी फैली हुई है
उस में भारत-सी प्यारी भूमि नहीं है।

ऋषियों के पावन जप-धन से
धरणीशों के शौर्य-तार से
भक्त-रत्न-शुचि-राग-दुग्ध से
कवि-प्रभुओं के भाव-सूत्र से
दिगन्त व्यापी प्रभा-दीप्ति से
पत्थर को पुष्प बना
सकने वाले अमर गान से
अग-जग कम्पित करने वाले
वीरों के पौरुष, प्रताप से
सौन्दर्यमयी साहित्य विभव से
हे पुत्र! तुम्हारा दिव्य विश्व चिर शोभित!
हे पुत्र! तुम्हारा पुण्य देश नित दीपित!!
"मैं भारत पुत्र हूँ" भक्ति युक्त कहने में
मानो क्यों अपमान क्यों शंका मन में?

(विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी से प्रकाशित डॉ. अवधेश नारायण मिश्र एवं डॉ. नन्द किशोर पाण्डेय द्वारा सम्पादित प्रस्तक 'आधुनिक भारतीय कविता' से साभार)

अद्भुत जीवन

- प्रो. सौरभ

अद्भुत जीवन की संज्ञा क्या है?
बिन प्रश्नों के उत्तर हो जाना;
या आस के पहले प्यास बुझाना;
या परछाई का प्रकाश में मिलना,
या स्वांस को विश्वास दिलाना,
या सुन लेना बिन बोले मन को;
या पढ़ लेना पर ना जतलाना;
या अतुल प्रेम के दीप जलाकर,
सत्य का प्रेम से मेल करना;
अद्भुत जीवन की संज्ञा क्या है?
सौरभ मन को ये समझाना,
द्वन्द प्रकृति का रूप नहीं है,
विस्मित होकर भी मुस्काना,
सरल भाव से, सजग ही रहना,
और जीवित से जीवन हो जाना ।।

(अधिष्ठाता, वाणिज्य संकाय, सिद्धार्थ, विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु)

रागिनी अग्रहरी की दो कविताएं

- मानुष कर्म

एक शिखर पर चल हे नर!
जीवन तो है एक अमिट पहर,
जो जग गया तो उठकर अब,
नित काम नया तू दिन भर कर।
धर धीर तेरी तकदीर तलक,
भर भाव तरल बन जा तू लहर,
वह डोर पकड़ जो थाम सके,
हर सफल तेरे मन भाव करें।

स्त्री

स्त्री एक सीख हैं, एक आधार है, जननी है, ब्रह्मा की पूर्ण रचना है।
जिसमें निर्मलता है, कोमलता है, सौंदर्य है, गहनता का गुण है।
स्त्री में जो कीर्ति है, वह संसार की समस्त वस्तुओं को समाहित करने वाली है।
स्त्री में धैर्य है, क्षमा है, स्त्री एक केंद्र है।
स्त्री का धैर्य एक अर्थ में अनंत है।
स्त्री के व्यक्तित्व में जिस मात्र में प्रेम है उसी मात्र में क्षमा भी है ।
स्त्री के व्यक्तित्व का सौंदर्य उसकी शांति से संबंधित है, यह एक शांत शीतल जल है जो अपनी धाराओं में सबको समाहित करने में समर्थ है।

(पूर्व छात्रा, प्राचीन इतिहास और पुरातत्व विभाग (उत्तीर्ण 2023)

ग़ज़ल

- शादाब शब्बीरी

मय-ए-गुलगूँ से है लबरेज पैमाना चले आओ
बहक जाए न ऐसे में ये दीवाना चले आओ
जरा सी देर लगती है जरा सी बात बढ़ने में
जरा सी बात बन जाती है अफसाना चले आओ
चराग-ए-दिल जला कर रख दिया है बाम-ए-इमकाँ पर
सुनो ऐ बन्दा-परवर मिस्ल-ए-परवाना चले आओ
मुझे दैर-ओ-हरम के तजकिरे गुमराह करते हैं
सहीफा-हाए-उल्फत ले के मयखाना चले आओ
कहीं चादर कहीं बिस्तर कहीं प्याला कहीं मय है
उजड़ता जा रहा है मेरा काशाना चले आओ
खिलाफ-ए-बुतपरस्ती पर बुतों से बात करनी है
चलो ऐसा करो कि तुम भी बुतखाना चले आओ
अगर शादाब से मिलना है तो नौगढ़ चले जाना
अगर मिलना हो साहिर से तो लुधियाना चले आओ

शोधार्थी, उर्दू विभाग, मो. नं. 8707878072

Scanned with OKEN Scanner

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में सिद्धार्थोत्सव का उद्घाटन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में स्थापना दिवस तथा दीक्षान्त समारोह के उपलक्ष्य में मनाये जा रहे सिद्धार्थोत्सव का शुभारम्भ दिनांक को हुआ। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने अपने उद्बोधन में कहा कि कि "सिद्धार्थोत्सव विश्वविद्यालय की अकादमिक, सांस्कृतिक और सृजनात्मक चेतना का प्रतीक है। ऐसे आयोजन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और टीम भावना को प्रोत्साहित करते हैं। उन्होंने आगे अपने सम्बोधन में कहा कि आज का युवा देश का भविष्य है। विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों की बहुआयामी प्रतिभा को निखारने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने गर्व व्यक्त किया कि विश्वविद्यालय के छात्र न केवल राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्कृष्ट सफलता प्राप्त कर रहे हैं, बल्कि सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भी सक्रिय सहभागिता से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। कुलपति ने छात्र-छात्राओं से आवाहन किया कि वे विनम्रता और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ जीवन में आगे बढ़ें, क्योंकि विनम्र व्यक्तित्व के साथ ही व्यक्ति वास्तविक ऊँचाइयाँ प्राप्त कर सकता है।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पद्मश्री प्रो. एस. चूड़ामणि गोपाल, पूर्व कुलपति, किंग जॉर्ज मेडिकल विश्वविद्यालय, लखनऊ ने कहा कि युवा अपनी ऊर्जा, प्रतिभा और नवाचार क्षमता को सही दिशा में लगाएँ, तो वे न केवल अपने जीवन में ऊँचाइयाँ प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि देश को वैश्विक स्तर पर अग्रणी बना सकते हैं। प्रो. गोपाल ने युवाओं को संदेश देते हुए कहा कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। निरंतर परिश्रम, आत्म-नियंत्रण और एकाग्रता ही सफलता की कुंजी है। उन्होंने छात्रों को जीवन में सकारात्मक सोच रखने, लक्ष्य निर्धारण करने और समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाने की प्रेरणा दी। उन्होंने यह भी कहा कि उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं है, बल्कि चरित्र निर्माण और मानवीय मूल्यों का विकास करना भी उतना ही आवश्यक है। उन्होंने विशेष रूप से छात्राओं को आत्मनिर्भर बनने, अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखने और विज्ञान, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, तथा अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में आगे बढ़ने का आह्वान किया। अपने उद्बोधन के अंत में प्रो. गोपाल ने कहा कि भारत तभी विकसित राष्ट्र बन सकेगा जब उसके युवा न केवल बुद्धिमान होंगे, बल्कि संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक भी बनेंगे। उन्होंने सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कविता शाह के नेतृत्व में हो रहे बहुआयामी विकास कार्यों की सराहना की और विश्वविद्यालय परिवार को स्थापना दिवस की शुभकामनाएँ दीं।

उद्घाटन सत्र में अतिथियों हेतु स्वागतोदबोधन अधिष्ठाता, छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव द्वारा प्रस्तुत किया गया एवं धन्यवाद-ज्ञापन विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री दीना नाथ यादव ने किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री राय सुशील कुमार, अधिष्ठाता वाणिज्य संकाय प्रो. सौरभ, अधिष्ठाता विज्ञान संकाय प्रो. प्रकृति राय, कुलानुशासक प्रो. दीपक बाबू, प्रो. हरीशकुमार शर्मा, प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे सहित विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकगण, वित्त-अधिकारी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्रा उपस्थित रहे।

स्थापना दिवस समारोह के अंतर्गत क्विज प्रतियोगिता का आयोजन विद्यार्थियों में सामान्य

ज्ञान, तर्कशक्ति और प्रतिस्पर्धात्मक भावना को विकसित करने के उद्देश्य से किया गया। अरावली टीम ने प्रथम, हिमगिरि टीम ने द्वितीय और नीलगिरि टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव ने किया और रिपोर्ट डॉ. लक्ष्मण सिंह एवं डॉ. अंकिता श्रीवास्तव ने तैयार की। कार्यक्रमों की श्रृंखला में दीक्षांत मंडप में कविता पाठ का आयोजन विद्यार्थियों में कविता सृजन एवं गायन की क्षमता को विकसित करने के उद्देश्य से किया गया। प्रतियोगिता में पंद्रह प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया जिसमे अतुल कुमार उपाध्याय एवं सुहानी श्रीवास्तव संयुक्त रूप से प्रथम, शालिनी शुक्ल द्वितीय एवं आफरीन बानो तथा रितिका संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रही। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जय सिंह यादव ने किया।

इसी क्रम में संस्कृत भाषा में वार्तालाप एवं संस्कृत गीत, कथा, चुटकुला इत्यादि के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा से परिचित करने के उद्देश्य से संस्कृत सम्भाषण का आयोजन भी किया गया। छात्र-छात्राओं ने सम्भाषण में उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संचालन विभाग के प्रभारी डॉ. धर्मेंद्र कुमार ने किया। कार्यक्रमों की अगली कड़ी में सामाजिक, लैंगिक, जलीय एवं वन संरक्षण पर डॉक्यूमेंट्री प्रतियोगिता का आयोजन भी डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह एवं डॉ. अमित साहनी के संयोजन में किया गया। प्रतियोगिता में लगभग ११० प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। अमित कुमार लोधी प्रथम, सूरज कुमार चौरसिया द्वितीय एवं खुशी शुक्ल तृतीय स्थान पर रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय स्टॉल, भोजन स्टॉल्स, छात्रों द्वारा लगाए गए विशेष स्टॉल्स तथा पौधशाला व हस्तकला स्टॉल्स आकर्षण का केंद्र बने रहे। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य परीक्षण शिविर एवं मानसिक स्वास्थ्य परामर्श केंद्र में भी विद्यार्थियों व शिक्षकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

Scanned with OKEN Scanner

सिद्धार्थोत्सव का दूसरा दिवस

योग, स्वास्थ्य, स्वरोजगार और सांस्कृतिक विविधता के रंगों में डूबा सिद्धार्थ विश्वविद्यालय परिसर

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में चल रहे पाँच दिवसीय सिद्धार्थोत्सव के दूसरे दिन की शुरुआत भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत योग एवं जुम्बा सत्र से हुई। प्रातःकालीन इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में योग के महत्त्व का अवबोधन कराना था। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं परीक्षा नियंत्रक श्री दीनानाथ यादव ने की। इस अवसर पर संयोजक प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे, डॉ. धर्मेंद्र, सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं एवं संकाय सदस्यों ने सक्रिय रूप से योगाभ्यास में भाग लिया। अपने संबोधन में कुलसचिव श्री यादव ने कहा कि आज के व्यस्त जीवन में अष्टांग योग में वर्णित यौगिक क्रियाएँ- धौति, आंकुचन, उदान, अपान आदि हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के संरक्षण में अत्यंत उपयोगी हैं। प्रत्येक व्यक्ति को योग और व्यायाम को अपनी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में 'स्वस्थ भारत, विकसित भारत' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य स्वास्थ्य और विकास के क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने हेतु जागरूकता और सहभागिता को प्रोत्साहित करना था। मुख्य वक्ता के रूप में माधव प्रसाद त्रिपाठी मेडिकल कॉलेज, सिद्धार्थनगर के कम्युनिटी मेडिसिन विभागाध्यक्ष प्रो. नौशाद आलम और सहायक प्राध्यापक डॉ. नीलम ने अपने वैज्ञानिक और प्रेरक विचार प्रस्तुत किए। दोनों वक्ताओं ने छात्रों को संतुलित आहार, स्वच्छता, और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा दी। परिचर्चा का संयोजन डॉ. कौशलेन्द्र चतुर्वेदी और डॉ. रविकांत त्रिपाठी ने किया।

इसके बाद विद्यार्थियों में स्वरोजगार और नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करने हेतु व्यापार विचार प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 14 छात्र-छात्राओं ने अपने नवाचारपूर्ण व्यापारिक प्रस्ताव प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों ने अपने विचारों को स्टार्टअप के रूप में विकसित करने की रूपरेखा भी साझा की। प्रतियोगिता में साक्षी पांडेय एवं उनकी टीम ने प्रथम, प्रियदर्शिनी पांडेय की टीम ने द्वितीय तथा हिमांशु वर्मा की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता का सफल संयोजन डॉ. अखिलेश दीक्षित एवं डॉ. विमल चंद्र वर्मा ने किया।

दिन के सांस्कृतिक सत्र की शुरुआत एकल नृत्य प्रतियोगिता से हुई, जिसमें 7 प्रतिभागियों ने अपनी कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में शालिनी शुक्ल ने प्रथम, अंशिका शुक्ल ने द्वितीय तथा खुशी साहनी और निधि अग्रहरि ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी क्रम में लोकनृत्य प्रतियोगिता' आयोजित की गई, जिसमें 10 समूहों ने भाग लिया। शालिनी एवं समूह प्रथम, साक्षी पाठक एवं समूह द्वितीय तथा अंकिता एवं समूह तृतीय स्थान पर रहे। दोनों सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का संयोजन डॉ. सरिता सिंह एवं डॉ. दीप्ति गिरी ने किया।

कार्यक्रम की अगली श्रृंखला में साहित्यिक रस का संचार करते हुए एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य कवि के रूप में प्रो. अजय कुमार श्रीवास्तव उपस्थित रहे। कवि सम्मेलन में देशभक्ति, वीरता और श्रृंगार रस से ओतप्रोत रचनाओं का पाठ किया गया। विद्यार्थियों ने अपनी स्वरचित कविताओं के माध्यम से समाज और राष्ट्रप्रेम की भावनाएँ व्यक्त कीं। शिक्षकों में प्रमुख रूप से प्रो. हरीशकुमार शर्मा, प्रो. नीता यादव, प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे तथा डॉ. शरदेन्दु त्रिपाठी आदि ने काव्य-पाठ किया, जिसको उपस्थित जनों द्वारा खूब सराहा गया। कार्यक्रम में शुभा अग्रवाल, श्री राय सुशील कुमार, प्रो. सौरभ सहित अनेक शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

इसके पश्चात इन्वेस्टमेंट एवं फाइनेंस विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका संयोजन डॉ. संतोष सिंह और डॉ. सत्यम मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया शाखा प्रबंधक श्री पीयूष गोयल ने अनुशासन, विविधीकरण और समर्पण के माध्यम से निवेश प्रबंधन पर प्रकाश डाला, वहीं डॉ. शिवम् ने सही समय पर निवेश के महत्त्व पर उपयोगी जानकारी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. सौरभ ने की। उन्होंने कहा कि आज के समय में निवेश के प्रति जागरूकता आवश्यक है, जिससे व्यक्ति आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सके।

इस प्रकार योग, स्वास्थ्य, साहित्य, कला, उद्यमिता और सांस्कृतिक चेतना के समन्वय से सजीव और प्रेरक दिवस का समापन 'मेरा भारत, मेरा गौरव- भाषाएँ एवं वेशभूषा' विषयक भाषण प्रतियोगिता से हुआ। इस प्रतियोगिता में छात्रों ने भारतीय विविधता में निहित एकता पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. रक्षा एवं डॉ. किरण गुप्ता ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही छात्र-कल्याण अधिष्ठाता प्रो. नीता यादव ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारत की संस्कृति की शक्ति उसकी विविधता में निहित है, जिसे हमें गर्व के साथ आत्मसात करना चाहिए। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री राय सुशील कुमार, श्रीमती शुभा अग्रवाल अधिष्ठाता वाणिज्य संकाय प्रो. सौरभ, अधिष्ठाता विज्ञान संकाय प्रो. प्रकृति राय, प्रो. हरीश कुमार शर्मा, प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे सहित विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकगण एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्रा उपस्थित रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में लगा रक्तदान शिविर

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में सिद्धार्थोत्सव के अंतर्गत युवाओं में युवाओं में स्वैच्छिक रक्तदान के प्रति जागरूकता फैलाना और उनमें मानवीय संवेदनाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से रक्तदान की महत्ता एवं जागरूकता विषयक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमे परिसर स्थित भैषज्य चिकित्सालय के डॉ. अरुण द्विवेदी ने छात्रों को रक्तदान के सामाजिक एवं चिकित्सीय महत्व से अवगत कराया।

डॉ. अरुण ने बताया कि रक्तदान एक महान मानवीय कार्य है जो अनगिनत जीवन बचा सकता है। डॉ. द्विवेदी ने कहा आगे बताया कि प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति को नियमित अंतराल पर रक्तदान करना चाहिए। उन्होंने रक्तदान से शरीर पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों की भी जानकारी दी।कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों ने भाग लिया।सभी ने भविष्य में रक्तदान शिविरों में सक्रिय भागीदारी का संकल्प लिया।

Scanned with OKEN Scanner

सिद्धार्थोत्सव का तृतीय दिवस

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में बिखरी विविध कार्यक्रमों की छटा

स्थापना दिवस एवं दीक्षान्त समारोह के उपलक्ष्य में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में चल रहे पाँच दिवसीय "सिद्धार्थोत्सव" के तृतीय दिवस में विविध शैक्षणिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं खेलकूद कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया गया। दिन भर चले आयोजनों में विद्यार्थियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी और शिक्षकों का सक्रिय सहयोग देखने को मिला।

दिन की शुरुआत आभासी पटल पर आयोजित "विकसित भारत/2047 में महिलाओं का योगदान" विषयक वेबिनार से हुई। इस वेबिनार में मुख्य वक्ता के रूप में गोरखपुर विश्वविद्यालय की कला संकाय की अधिष्ठाता एवं उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा चयन बोर्ड की पूर्व अध्यक्ष प्रो. कीर्ति पांडेय तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय की ही प्रो. सुधा यादव ने महिलाओं के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान, सामाजिक एवं संस्थागत चुनौतियों, तथा सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं और नीतियों पर विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव एवं डॉ. किरण गुप्ता ने किया।

इसके पश्चात विद्यार्थियों की रचनात्मक एवं आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से "कृत्रिम बुद्धिमत्ता : वरदान अथवा अभिशाप" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में दस प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिसमें मनीष जायसवाल एवं दानिश गुप्ता संयुक्त रूप से प्रथम, मो. शोएब एवं अंजलि पांडेय संयुक्त रूप से द्वितीय तथा हर्ष सिंह और साक्षी मौर्या संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. मनीष शर्मा एवं डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने किया।

इसके बाद छात्रों में नैतिक मूल्यों और भारतीय जीवन दर्शन की समझ विकसित करने हेतु "संस्कारशाला" कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें डॉ. शरदेन्दु एवं डॉ. प्रदीप कुमार पांडेय के संयोजन में षोडश संस्कारों पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें रूपाली कुमारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आभासी सत्र में दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान, भोपाल के निदेशक डॉ. मुकेश मिश्रा ने छात्रों को भारतीय जीवन पद्धति के सोलह प्रमुख संस्कारों के महत्व से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि ये संस्कार व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक के जीवन को शुद्ध, संतुलित और मर्यादित बनाते हैं तथा मनुष्य के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास को दिशा प्रदान करते हैं।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में साहित्य के माध्यम से समाज और राष्ट्रनिष्ठा को जोड़ने के उद्देश्य से एक साहित्यिक परिचर्चा आयोजित की गई। इसमें प्रो. हरीश कुमार शर्मा, डॉ. विशाल गुप्त, डॉ. हृदय कान्त पांडेय सहित कई प्रतिष्ठित विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे एवं डॉ. आभा द्विवेदी ने किया।

सांस्कृतिक सत्र की शुरुआत "कबीरा" नामक प्रस्तुति से हुई, जिसमें विश्वविद्यालय की छात्राओं- शकीला, शर्मिला, निवेदिता एवं उनके समूह ने संत कबीर के दोहों पर आधारित मधुर गायन प्रस्तुत किया। इस प्रस्तुति ने जनमानस को देशज भाषा में ज्ञान, भक्ति और मोक्ष मार्ग का संदेश दिया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. रेनू त्रिपाठी और डॉ. आभा द्विवेदी ने किया।

इसके बाद एक भव्य मुशायरा आयोजित हुआ, जिसमें प्रो. सौरभ, प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे, डॉ. शरदेन्दु त्रिपाठी, डॉ. बालगंगाधर सहित अनेक आमंत्रित कवियों और विद्यार्थियों ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा का सुंदर प्रदर्शन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. कविता शाह ने की। रचनाकारों ने अपनी प्रभावशाली रचनाओं से श्रोताओं का मन मोह लिया। प्रस्तुतियों में प्रेम, देशभक्ति, सामाजिक समरसता, हास्य और व्यंग्य के रंग झलके। एक शायर ने अपने कलाम की इन पंक्तियों से हिन्दी-उर्दू एकता का सन्देश दिया- मोहब्बत करने वालों पर मोहब्बत लुटाता हूँ,/मैं हिंदी का वो बेटा हूँ जो उर्दू गुनगुनाता हूँ।

दिन के अंतिम चरण में नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन-जागरण फैलाना था। इस प्रतियोगिता में "महिला सशक्तीकरण और मोबाइल एडिक्शन" पर आधारित नाटक ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, "बेटी : अभिशाप या वरदान" विषयक प्रस्तुति द्वितीय और "वन संरक्षण" विषयक प्रस्तुति तृतीय स्थान पर रही। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. दिनेश प्रसाद ने किया।

आयोजनों की श्रृंखला का समापन खेलकूद प्रतियोगिताओं के साथ हुआ, जिनका उद्देश्य विद्यार्थियों में शारीरिक दक्षता, टीम भावना और खेल भावना का विकास करना था। प्रो. दीपक बाबू, डॉ. विशाल गुप्ता एवं डॉ. प्रज्ञेश नाथ त्रिपाठी के संयोजन में रस्साकशी, दौड़ सहित विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस प्रकार सिद्धार्थोत्सव का तृतीय दिवस ज्ञान, सृजन, संस्कार, साहित्य और खेल भावना का सुंदर संगम बन गया।

'भारत की ज्ञान-परंपरा और योग का विज्ञान' विषय पर प्रो. दिनेश कुमार सिंह का व्याख्यान

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के स्थापना सप्ताह "सिद्धार्थ-उत्सव" के तीसरे दिन "भारत की ज्ञान परंपरा और योग का विज्ञान" विषय पर एक प्रेरक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राणी विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं वेद विज्ञान के प्रतिष्ठित विद्वान प्रो. दिनेश कुमार सिंह ने अपने व्याख्यान में भारतीय ज्ञान परंपरा के वैज्ञानिक आयामों पर सारगर्भित विचार व्यक्त किए।

प्रो. सिंह ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ें वेदों में निहित हैं, जहाँ हजारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषि-मुनियों ने प्रकृति, चेतना और मानव जीवन के गूढ़ रहस्यों का वैज्ञानिक विवेचन किया। उन्होंने बताया कि वेदों में निहित यह ज्ञान आज से लगभग दस हजार वर्ष पूर्व अभिव्यक्त हुआ था, किंतु आधुनिक विज्ञान अब जाकर उन सत्यों को पुनः खोजने और प्रमाणित करने की दिशा में अग्रसर है।

उन्होंने विशेष रूप से उल्लेख किया कि आज जिस "Unified Field Theory" की खोज में आधुनिक भौतिक विज्ञान लगा हुआ है, उसका मूल भाव वेदांत और योग दर्शन में पहले से ही विद्यमान है। भारतीय मनीषियों ने 'एको सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' के माध्यम से उस एकत्व के सिद्धांत की स्थापना की, जिसे आज विज्ञान भौतिक स्तर पर खोजने का प्रयास कर रहा है।

अपने व्याख्यान में उन्होंने टेलीपैथी, टेलीपोर्टेशन तथा वेदों में उल्लिखित मनोवैज्ञानिक और जैविक शक्तियों का उल्लेख करते हुए कहा कि आज जिन घटनाओं को विज्ञान "पैरासाइकोलॉजिकल" कहकर शोध कर रहा है, वे हमारे वैदिक ग्रंथों में पहले से विद्यमान हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय मनीषा का यह ज्ञान केवल दार्शनिक नहीं, बल्कि व्यवहारिक और वैज्ञानिक है; जो मानवता को समग्र स्वास्थ्य, समरसता और आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाता है।

कार्यक्रम में संगोष्ठी संयोजक डॉ. सच्चिदानंद चौबे ने अतिथियों का स्वागत किया। अधिष्ठाता छात्र-कल्याण प्रोफेसर नीता यादव ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का संचालन सदस्य मयंक कुशवाहा ने किया तथा कार्यक्रम की व्यवस्था की जिम्मेदारी डॉ. नीरज सिंह द्वारा निभाई गई।

इस अवसर पर प्रो. हरीश कुमार शर्मा, प्रो. सत्येंद्र दुबे, डॉ. विशाल गुप्ता, डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह, डॉ. अखिलेश दीक्षित, डॉ. दिनेश प्रसाद, डॉ. अनुज, डॉ. हृदयकान्त पांडेय, डॉ. देवबख्श सिंह, डॉ. हरेंद्र शर्मा सहित विश्वविद्यालय के अनेक शिक्षक, विद्यार्थी और कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

Scanned with OKEN Scanner

स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में स्थापना दिवस समारोह की श्रृंखला के अंतर्गत दो दिवसीय राष्ट्रीय पुस्तक मेला के उद्घाटन के अवसर पर अपने व्यख्यान में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने कहा कि विश्वविद्यालय की आत्मा उसका पुस्तकालय होता है, और पुस्तकालय की आत्मा उसमें उपलब्ध गुणवत्तापूर्ण पुस्तकें होती हैं। विद्यार्थी और शिक्षक जितना अधिक अध्ययन से जुड़ेंगे, उतनी ही तीव्रता से ज्ञान का स्तर और शैक्षणिक गुणवत्ता का विकास होगा।

उन्होंने आगे कहा कि तकनीकी युग में पुस्तक-पठन के समक्ष चुनौतियाँ अवश्य हैं, परंतु डिजिटल माध्यमों ने अध्ययन के नए आयाम भी खोले हैं। विश्वविद्यालय आज भौतिक पुस्तकों के साथ-साथ डिजिटल संसाधनों से भी समृद्ध हो रहा है।

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भारत के विभिन्न हिस्सों- आगरा, कर्नाटक, मद्रास, जयपुर, दिल्ली, लखनऊ बनारस आदि स्थानों से आए प्रतिष्ठित प्रकाशकों एवं वितरकों ने भाग लिया। इन प्रकाशकों द्वारा हजारों की संख्या में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया। विश्वविद्यालय परिसर में विविध विषयों पर ज्ञानवर्धक और शोधोन्मुख पुस्तकों की यह व्यापक प्रदर्शनी विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधार्थियों और पुस्तक-प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय प्रभारी डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, सहायक प्रभारी डॉ. राजेश कुमार सिंह, प्रो. अरविंद सिंह, प्रो. सुनीता त्रिपाठी, प्रो. विजय कुमार राय, प्रो. बृजेश त्रिपाठी, प्रो. एस.पी. सिंह सहित विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, कर्मचारीगण, विद्यार्थी एवं बड़ी संख्या में पुस्तक-प्रेमी उपस्थित रहे।

सिद्धार्थोत्सव में एनसीसी का कार्यक्रम सम्पन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में चल रहे सिद्धार्थोत्सव के अंतर्गत युवाओं में सशस्त्र सीमा बल एवं केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में नवल सिंह, निरीक्षक, 443वीं वाहिनी, सशस्त्र सीमा बल ने छात्रों को केंद्रीय अर्द्धसैनिक बलों की संरचना, कार्यप्रणाली तथा देश की सीमाओं की सुरक्षा में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि केंद्रीय अर्द्धसैनिक बलों की बटालियन न केवल सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा का कार्य करती है, बल्कि स्थानीय नागरिकों के साथ समन्वय स्थापित कर सीमावर्ती विकास, जनसंपर्क और सामाजिक समरसता को भी बढ़ावा देती है।

अपने वक्तव्य के दौरान निरीक्षक नवल सिंह ने युवाओं को केंद्रीय अर्द्धसैनिक बलों की भर्ती प्रक्रिया से भी अवगत कराया। उन्होंने भर्ती के विभिन्न चरणों- लिखित परीक्षा, शारीरिक दक्षता परीक्षण, चिकित्सा परीक्षण और साक्षात्कार की विस्तार से जानकारी दी तथा विद्यार्थियों को तैयारी के व्यावहारिक सुझाव भी दिए। इसके साथ ही उन्होंने प्रतिभागियों को सीपीआर का प्रदर्शन कर आपात स्थिति में किसी व्यक्ति का जीवन बचाने के व्यावहारिक उपाय सिखाए। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के ८५ एनसीसी कैडेट्स तथा एसोसिएट एनसीसी ऑफिसर लेफ्टिनेंट डॉ. प्रज्ञेश नाथ त्रिपाठी उपस्थित रहे। उन्होंने कार्यक्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऐसे आयोजन न केवल युवाओं में देशसेवा की भावना को प्रोत्साहित करते हैं, बल्कि उन्हें अनुशासन, नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व की ओर भी प्रेरित करते हैं।

सिद्धार्थोत्सव के चतुर्थ दिवस में आयोजित हुए विभिन्न कार्यक्रम

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में चल रहे पाँच दिवसीय सिद्धार्थोत्सव के चतुर्थ दिवस में आयोजनो की श्रृंखला में दिन की शुरुआत छात्रों की रचनात्मकता और सामाजिक जागरूकता के उत्कृष्ट उदाहरण 'ऐड मेड शो' के साथ हुई। कार्यक्रम में विभिन्न टीमों ने विज्ञापनों के माध्यम से प्रसारित सामाजिक संदेशों, जैसे- लैंगिक समानता, स्वास्थ्य जागरूकता, शिक्षा और स्वास्थ्य के समन्वय, योग के महत्त्व, फास्ट फूड के दुष्प्रभाव, 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' और 'स्वच्छ भारत मिशन' आदि पर प्रभावशाली नाट्य रूपांतरण तैयार कर प्रस्तुत किये। वाणिज्य संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सौरभ ने सभी प्रतिभागियों की रचनात्मकता, संवाद-अभिनय और प्रस्तुति की सराहना करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी और विद्यार्थियों को अपनी सृजनात्मक क्षमता को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन डॉ. दीपक जायसवाल और डॉ. नीरज सिंह के कुशल नेतृत्व में हुआ।

इसी क्रम में 'आप वह पीढ़ी हैं जो हर समस्या को हल कर सकती है' विषयक एक प्रेरणात्मक संवाद-कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता शहरी वाद प्रबंधन केंद्र, गोरखपुर की प्रमुख डॉ. सौम्या श्रीवास्तव ने युवाओं से सकारात्मक सोच, सामाजिक जिम्मेदारी और नेतृत्व क्षमता के महत्व पर अपने प्रेरक विचार साझा किए। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव और डॉ. हरेंद्र शर्मा ने किया।

कार्यक्रमों की इसी श्रृंखला में छात्रों में कला की क्षमता का विकास एवं उन्नयन हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से एकल गायन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमे 18 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में शालिनी पांडेय प्रथम, देवमणि एवं अदिति संयुक्त रूप से द्वितीय तथा रोहन तृतीय स्थान पर रहे। प्रतियोगिता का संयोजन डॉ. सुनीता त्रिपाठी एवं डॉ. हृदयकुमार पांडेय ने किया।

दीक्षांत मंडप में एक स्थल चित्र प्रतियोगिता का आयोजन डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव के संयोजन में किया गया। इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य छात्रों में प्रतिभागिता, कल्पना-शक्ति एवं रचनात्मकता विकसित करना रहा। प्रतियोगिता में 10 छात्रों ने स्थल चित्र को कैनवास पर उतारकर अपनी कल्पना-शक्ति एवं रचनात्मकता का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में आदित्य प्रताप प्रथम, हरिभजन द्वितीय एवं शिखा कशौधन तृतीय स्थान पर रहे।

इसके अतिरिक्त विवि में चल रहे सिद्धार्थोत्सव में छात्रों के कलात्मक कार्य- कहानी अथवा चित्र के माध्यम से प्रदर्शित करने के उद्देश्य से डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव एवं डॉ. अमित कुमार साहनी के संयोजन में सामान्य फोटोग्राफी प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कुल 106 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया, जिसमे श्रद्धा तिवारी प्रथम, जितेन्द्र कुमार द्वितीय तथा स्वाति तिवारी तृतीय स्थान पर रहे।

इसके पश्चात छात्रों में राष्ट्र-निर्माण की भावना विकसित करने तथा 'विकसित भारत/2047' के लक्ष्य के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से 'विकसित भारत/२०४७' विषयक व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात अर्थशास्त्री प्रो. वी. के. श्रीवास्तव ने वोकल फॉर लोकल, एम.एस.एम.ई., निवेश मेक इन इंडिया, एक जिला एक उत्पाद जैसे मुद्दों पर विस्तार से अपने विचार साझा किये। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अखिलेश दीक्षित ने किया।

कार्यक्रमों की इसी कड़ी में छात्रों को वन्यजीव संरक्षण के प्रति जागरूक करने, प्रकृति-संरक्षण एवं जनजागरूकता के उद्देश्य से वन्यजीव फोटोग्राफी प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कुल 106 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया, जिसमे अब्दुल कादिर प्रथम, डॉ. अतुल उपाध्याय द्वितीय तथा अभिषेक कुमार श्रीवास्तव तृतीय स्थान पर रहे। प्रतियोगिता को डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव एवं डॉ. अमित कुमार साहनी के संयोजन में आयोजित किया गया।

Scanned with OKEN Scanner

समारोह की सन्ध्या सांस्कृतिक कार्यक्रमों से सरस हुई। शुरुआत छात्रों द्वारा संस्कृत साहित्य में नाट्यविद्या के माध्यम से हुई। नैतिक राजनीतिक एवं सामाजिक मूल्यों को बताने के उद्देश्य से 'मशकधानी' संस्कृत नाटिका का मंचन किया गया। इस नाट्य के माध्यम से छात्रों ने कला, शिल्प, नर्तन एवं हास्य-व्यंग्य आदि काव्य की विधाओं से परिचित कराते हुए श्रोतागण को अभिभूत किया। इस कार्यक्रम का संयोजन डॉ. धर्मेंद्र कुमार एवं डॉ. अमरजीत यादव ने किया।

इसी क्रम में छात्रों को भारतीय परिधानों एवं परिवेश के बारे में परिचित करने के उद्देश्य से परिधान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता में 40 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया, जिनमें से रोहन एवं गायत्री को संयुक्त रूप से प्रथम, स्वाति त्रिपाठी को द्वितीय तथा कमलेश प्रजापति, बेबी अर्वतिका एवं साक्षी पाठक को संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता का संयोजन डॉ. अमित कुमार साहनी, डॉ. अंकिता श्रीवास्तव ने किया।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में द्वितीय पुरातन छात्र मिलन समारोह-2025 सम्पन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में चल रहे पांच दिवसीय सिद्धार्थोत्सव के अंतर्गत आज द्वितीय पुरातन छात्र मिलन समारोह-2025 का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न सत्रों के भूतपूर्व विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति एवं एलुमनाई एसोसिएशन की संरक्षिका प्रो. कविता शाह ने सभी भूतपूर्व विद्यार्थियों का हार्दिक स्वागत किया तथा विश्वविद्यालय की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उन्नत शैक्षणिक कार्यक्रमों और आधुनिक बुनियादी ढांचे की प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने एलुमनाई को विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, सामाजिक एवं विकासात्मक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता के लिए आवाहन किया।

इस अवसर पर एलुमनाई एसोसिएशन द्वारा आयोजित लोगो निर्माण प्रतियोगिता के विजेता पुरातन छात्र संदीप सिंह को सम्मानित किया गया तथा एसोसिएशन के लोगो का अनावरण विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. शाह के करकमलों से डिजिटल माध्यम से किया गया। साथ ही एसोसिएशन के ध्येय वाक्य "शुभस्य प्रस्थानः" का भी अनावरण किया गया, जिसकी रचयिता संस्कृत विभाग की सहायक आचार्य डॉ. आभा द्विवेदी को इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुआ। विश्वविद्यालय में पुनः आगमन पर सभी पुरातन छात्रों का तिलक लगाकर एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर अभिनंदन किया गया। एलुमनाई सदस्यों ने अपने छात्र जीवन के संस्मरण साझा किए और विश्वविद्यालय की प्रगति के लिए विचार-विमर्श किया। उन्होंने विश्वविद्यालय को नवाचार और विकास की ऊंचाइयों तक ले जाने के सुझाव भी प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव, अधिष्ठाता विज्ञान संकाय प्रो. प्रकृति राय एवं अधिष्ठाता वाणिज्य संकाय प्रो. सौरभ सहित डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह सहित सभी शिक्षक उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय में मनी गांधी एवं शास्त्री जयन्ती

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में दिनांक 2 अक्टूबर, 2025 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री जी का जयंती समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महात्मा गांधी एवं लालबहादुर शास्त्री जी के छायाचित्र पर पुष्पार्पण कर किया गया। अधिष्ठाता छात्र-कल्याण एवं कला संकाय प्रोफेसर नीता यादव ने उक्त दोनों महापुरुषों को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के बाद अध्यक्षीय उद्बोधन में दोनों महापुरुषों के राष्ट्र-निर्माण में योगदान पर अपने विचार रखते हुए कहा कि 'राष्ट्रपिता' कहे जाने वाले महात्मा गांधी का जीवन अहिंसा, सविनय अवज्ञा और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को समर्पित था। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उनके नेतृत्व ने न केवल लाखों लोगों को प्रेरित किया, बल्कि 1947 में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को अंततः उखाड़ फेंकने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2 अक्टूबर, 1904 को जन्मे भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि शास्त्री जी एक महान राजनेता थे, जिनकी विरासत न केवल उनकी नीतियों के लिए, बल्कि उनकी विनम्रता के लिए भी याद की जाती है।

उक्त जयंती के अवसर पर संकाय स्तर पर पोस्टर प्रतियोगिता एवं गांधी जी एवं लाल बहादुर शास्त्री पर श्रुतलेख एवं कोटेशन लेख प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। छात्रों द्वारा प्रेषित पोस्टर एवं कोटेशन को उन्होंने मंच पर प्रदर्शित किया तथा छात्रें के देश-प्रेम की भावना की सराहना की। कार्यक्रम में डॉ. लक्ष्मण सिंह तथा डॉ. जय सिंह यादव ने भी अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. संतोष सिंह ने आभार-ज्ञापन करते हुए बताया कि गांधी जी को महात्मा क्यों कहा जाता है।

उक्त कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. धर्मेंद्र ने किया। संस्कृत विभाग की अतिथि प्रवक्ता डॉ. सुजाता यादव यादव ने राम धुन कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के भजन एवं लोकगीत प्रस्तुत किये। संस्कृत विभाग के ही अतिथि प्रवक्ता आनंद कुमार पासवान ने 'दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल' एवं 'रघुपति राघव राजा राम' की प्रस्तुति देकर गांधी जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में डॉ. सत्यम मिश्रा, डॉ. अनुज, सुश्री ममता, तकनीकी सहायक रहमान खान, असलम शेख, समस्त आरक्षक तथा शोधार्थी-विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में हुआ अन्तर महाविद्यालयीय खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु की क्रीड़ा परिषद् द्वारा अन्तर महाविद्यालयीय विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं 10-15 अक्टूबर तक आयोजित की गयीं, जिसके अन्तर्गत अंतर-महाविद्यालयीय पुरुष एवं महिला कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 11.10.2025 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय परिसर के महाकश्यप खेलकूद मैदान में अत्यंत उल्लासपूर्ण और गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। प्रतियोगिता का शुभारंभ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने अपने कर-कमलों से फीता काटकर किया। उन्होंने उद्घाटन अवसर पर खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल केवल प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि अनुशासन, आत्मविश्वास और टीम भावना का सशक्त माध्यम है। उनके प्रेरणादायक संबोधन ने प्रतिभागी खिलाड़ियों तथा उपस्थित जनों में उत्साह और उमंग का संचार किया। उन्होंने प्रतिभाग कर रही सभी टीमों के खिलाड़ियों से विस्तृत परिचय भी प्राप्त किया।

इस प्रतियोगिता में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय से संबद्ध विभिन्न महाविद्यालयों की टीमों ने भाग लेकर अपनी प्रतिभा और खेल कौशल का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। महिला वर्ग के फाइनल मुकाबले में एम.एल.के. पी.जी. कॉलेज, बलरामपुर की टीम ने अद्भुत रणनीति और सामंजस्य का परिचय देते हुए एच.आर. पी.जी. कॉलेज, खलीलाबाद, जनपद संत कबीरनगर को 28-17 से पराजित कर विजेता का खिताब अर्जित किया। एच.आर. पी.जी. कॉलेज की टीम उपविजेता रही और उसने पूरे मैच के दौरान मजबूत चुनौती प्रस्तुत की। पुरुष वर्ग के फाइनल में गंगादेवी पी.जी. कॉलेज की टीम ने सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की टीम को 19-11 से हराकर विजेता का स्थान प्राप्त किया।

Scanned with OKEN Scanner

इस पूरे खेल कार्यक्रम का संचालन क्रीड़ा परिषद् के संयुक्त सचिव डॉ. धर्मेंद्र कुमार ने कुशलतापूर्वक किया। उद्घाटन सत्र में आगंतुक अतिथियों एवं टीमों का स्वागत क्रीड़ा समिति (परिसर) के सह-संयोजक डॉ. जय सिंह यादव द्वारा किया गया। प्रतियोगिता का विजेता-उपविजेता ट्राफी एवं पदक वितरण दीक्षांत स्थल पर आयोजित समारोह के द्वितीय सत्र में अपराह्न 3:00 बजे विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री दीनानाथ यादव एवं अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव के द्वारा किया गया। पुरुष वर्ग में 'मैन ऑफ द मैच' एवं 'बेस्ट रेडर' का पदक गंगा देवी कपिल देव तिवारी महाविद्यालय बुझैनी बस्ती के खिलाड़ी अयान को दिया गया, वहीं दूसरे महिला वर्ग में एम.एल.के. पी.जी. कालेज बलरामपुर की खिलाड़ी पूनम को 'वूमेन आफ द मैच' एवं 'बेस्ट रेडर' का पदक उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए दिया गया। उक्त प्रतियोगिता शिवहर्ष किसान पी.जी. कालेज, बस्ती के डॉ. त्रिलोकी नाथ (पर्यवेक्षक) और नेक्सजन स्पोर्ट्स क्लब के प्रशान्त अमन (रेफरी) एवं अन्य सदस्यों के निर्देशन में सम्पन्न करायी गयी। अन्त में सभी मंचस्थ अतिथियों एवं टीमों के प्रति आभार ज्ञापन क्रीड़ा समिति संयोजक डॉ. विशाल गुप्ता के द्वारा किया गया।

इस भव्य आयोजन की संपूर्ण रूपरेखा का समन्वयन और व्यवस्थापन डॉ. आजाद कुमार द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो. सौरभ, क्रीड़ा समिति के सचिव डॉ. कपिल गुप्ता, डॉ. सरिता सिंह, डॉ. रक्षा, अब्दुल हफीज, डॉ. मुन्नू खान, डॉ. हरेन्द्र शर्मा, डॉ. मयंक कुशवाहा, समस्त वालेंटियर एवं अन्य बहुत से सहयोगी शिक्षक एवं छात्र-छात्रा उपस्थित रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में मिशन शक्ति अभियान-5 (23/9/25 से 25/10/25 तक)

उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा मिशन शक्ति के पांचवें चरण के विशेष अभियान की शुरुआत 20 सितंबर 2025 को लखनऊ के लोक भवन सभागार से की गई। पांचवें चरण के इस विशेष अभियान के द्वारा सरकार का मुख्य उद्देश्य महिला सुरक्षा, स्वावलंबन एवं महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है। शासन के दिशा निर्देशानुसार सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में माननीय कुलपति प्रोफेसर कविता शाह जी के मार्गदर्शन में 23 सितंबर से विविध प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत 23 सितंबर को 'मिशन शक्ति अभियान एवं महिला सशक्तीकरण' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव ने की। 24 सितंबर 2025 को महिला सुरक्षा, महिला सम्मान एवं महिला स्वावलंबन विषय पर स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्र-छात्राओं ने अपने मौलिक विचारों को व्यक्त किया। 25 सितंबर को महिला सशक्तीकरण पर एक व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 26 सितंबर को स्वास्थ्य परीक्षण एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया तथा मानसिक स्वास्थ्य परामर्श केंद्र की समन्वयक डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव द्वारा महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित परामर्श एवं काउंसलिंग की गई। 27 सितंबर 2025 को एंटी रैगिंग समिति द्वारा छात्र-छात्राओं को जागरूक किया गया तथा महिला उत्पीड़न निवारण समिति द्वारा छात्राओं की विशेष काउंसलिंग करते हुए उनकी समस्याओं का निराकरण किया गया। 29 सितंबर 2025 को 'स्वस्थ नारी स्वास्थ्य देश' विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन कराया गया। साथ ही आहार- व्यवहार, पोषण एवं स्वच्छता से संबंधित जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। 29 सितंबर 2025 से 4 अक्टूबर 2025 तक विश्वविद्यालय की महिला अध्ययन केंद्र एवं मिशन शक्ति के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को जागरूक करने हेतु सप्ताहिक जागरूकता अभियान का संचालन किया गया। इसके अंतर्गत विश्वविद्यालय की छात्राओं द्वारा अलग-अलग गाँवों में जाकर मिशन शक्ति अभियान के माध्यम से महिलाओं को जागरूक किया गया। इस अभियान में लोक प्रशासन विषय की एम.ए. की छात्रा सुषमा एवं संध्या द्वारा ग्रामीण महिलाओं हेतु जागरूकता अभियान का संचालन किया गया। इसी प्रकार राजनीति विज्ञान की छात्रा शकीला खातून द्वारा तथा एम.ए. अर्थशास्त्र की छात्रा राधा शुक्ला द्वारा गाँव में महिलाओं को जागरूक करने का कार्य किया गया। 9 अक्टूबर 2025 को विश्वविद्यालय के कला संकाय से जागरूकता रैली निकाली गई। जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक/स्वयंसेविकाएं तथा एनसीसी कैडेट ने भी भागीदारी की। इस रैली के माध्यम से छात्र-छात्राओं को महिला सम्मान एवं सुरक्षा हेतु जागरूक किया गया। 10 अक्टूबर 2025 को छात्राओं की आत्मरक्षा हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित नेक्स जेन स्पोर्ट्स क्लब सिद्धार्थनगर के प्रशिक्षक श्री अमन द्विवेदी एवं सुश्री शिवानी द्विवेदी ने छात्राओं को आत्मरक्षा के कई महत्वपूर्ण तकनीक बताएं। कार्यशाला का आयोजन हिंदी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. जय सिंह यादव के द्वारा मिशन शक्ति के तत्वावधान में किया गया। 11 अक्टूबर 2025 को छात्र-छात्राओं के कौशल संवर्धन हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में श्री राहुल सिंह, डॉ. उषा यादव डॉ. अनुपम गुप्ता, श्री फैजुल्लाह अहमद एवं श्री आलोक त्रिपाठी ने अपने-अपने सत्रों में विद्यार्थियों को कौशल विकास, व्यक्तित्व निर्माण, संवाद कौशल, नेतृत्व क्षमता एवं रोजगारोन्मुख दृष्टिकोण के विविध पहलुओं पर मार्गदर्शन प्रदान किया। कार्यशाला का आयोजन डॉ. संतोष सिंह, सहायक आचार्य अर्थशास्त्र विभाग द्वारा मिशन शक्ति के अंतर्गत किया गया। 14 अक्टूबर 2025 को छात्राओं में साइबर सुरक्षा, डिजिटल अरेस्ट एवं डिजिटल फ्रॉड के प्रति जागरूकता विषय पर ऑनलाइन वेबीनार का आयोजन किया गया तथा 15 अक्टूबर 2025 को छात्राओं में साइबर सुरक्षा, डिजिटल अरेस्ट एवं डिजिटल फ्रॉड विषय पर ऑनलाइन मोड में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दोनों ही कार्यक्रमों का आयोजन एम.बी.ए. विभाग के सहयुक्त आचार्य डॉ. मनीष शर्मा द्वारा मिशन शक्ति के तत्वावधान में किया गया। इसी क्रम में दिनांक 16 अक्टूबर 2025 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में हस्तशिल्प प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं ने उत्साह पूर्वक प्रतिभा किया। प्रदर्शनी में टाई एंड डाई, खिलौने, वॉल हैंगिंग, गुड़िया, हाथ की कढ़ाई की वस्तुएं, सजावट के समान, मिट्टी के दिए इत्यादि हस्त निर्मित वस्तुओं को सम्मिलित किया गया। उक्त कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए माननीय कुलपति जी ने विद्यार्थियों को औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ कौशल विकास को भी महत्वपूर्ण बताया और कहा की प्रत्येक विद्यार्थी के अंदर एक हुनर (कौशल) छिपा होता है जिसे बाहर लाया जाना चाहिए। जिससे उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके। दिनांक 25 अक्टूबर 2025 को मिशन शक्ति अभियान के पांचवें चरण के अंतर्गत कार्यक्रमों की श्रृंखला में गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में छात्राओं द्वारा लोक जीवन से जुड़े गीत, स्त्री जागरण के प्रेरक गीत इत्यादि की सुंदर प्रस्तुति की गयी। उक्त कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह जी के मार्गदर्शन तथा महिला अध्ययन केंद्र की समन्वयक प्रो. नीता यादव के निर्देशन में मिशन शक्ति फेज-5 की नोडल अधिकारी डॉ. सुनीता त्रिपाठी, सह नोडल अधिकारी डॉ. रेनू त्रिपाठी तथा सह नोडल अधिकारी डॉ. रक्षा के संयोजन में संपन्न किया गया।

(डॉ. सुनीता त्रिपाठी, नोडल अधिकारी-मिशन शक्ति, फेज-5, सि.वि., कपिलवस्तु)

बुद्ध-वचन
पञ्ञोतसुत्त

"लोक में प्रद्योत क्या है,
लोक में कौन जानने वाला है।
प्राणियों में कौन काम में सहायक है,
और उसके चलने का रास्ता क्या है?
कौन आलसी और उद्योगी दोनों की,
रक्षा करता है, जैसे माता पुत्र की?
किसके होने से सभी जीवन धारण करते हैं,
जितने प्राणी पृथ्वी पर बसते हैं?"

"प्रज्ञा लोक में प्रद्योत है,
स्मृति लोक में जागती रहती है।
प्राणियों में बैल काम में साथ देता है,
और जोत उसके चलने का रास्ता है।
वृष्टि आलसी और उद्योगी दोनों की,
रक्षा करती है, जैसे माता पुत्र की,
वृष्टि के होने से सभी जीवन धारण करते हैं,
जितने प्राणी पृथ्वी पर बसते हैं।"

(उ.प्र. हिन्दी संस्थान से प्रकाशित राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक 'पालि साहित्य का इतिहास' से साभार)

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner